ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 44-47

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

उत्तर प्रदेश में छापा कला का विकास

संजीव किशोर गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर–ललित कला संकाय, कला एवं शिल्प महाविद्याालय, लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ0प्र0), भारत

सारांश : *उत्तर प्रदेश प्राचीन काल से ही अपने महान सांस्कृतिक केन्द्रों– मथुरा, अहिच्छत्र, प्रयाग, वाराणसी, कौशाम्बी, कान्यकुन्ज आदि की उन्नत कला एवं शिल्पों के लिए प्रसिद्ध रहा है जो उत्तर मध्यकाल में मुगल शासन के मध्य पनपे अपने नगरों– लखनऊ, आगरा, फर्रूखाबाद, रामपुर, मुरादाबाद, मऊ, मिर्जापुर आदि की सुरूचि एवं लावण्यपूर्ण हस्तकलाओं– चिकनकारी, पत्थर व पीतल के बर्तन, काष्ठ ब्लॉक से छपे–बने वस्त्र, कालीन, हाथीदॉत पर नक्काशी जैसे अनेक शिल्पों के लिए अभी भी विख्यात है। वास्तुकला के क्षेत्र में जिसे बनारस, सारनाथ, मथुरा, वृन्दावन के मन्दिर, फतेहपुर, सीकरी, ताजमहल, एतमातुद्दौला, लखनऊ के इमामबाड़े कितने ही अन्य भवन विश्व में गौरव प्रदान करते हैं। जिसके कला भण्डार को फतेहपुर सीकरी और आगरा में मुगल दरबार के संरक्षण में रस सिद्ध चित्रकारों– दशवंत, बसावन, केसुदास, टुनर, चिन्तामन, गोवर्धन, उस्ताद मंसूर जैसे अनेकों कलाकारों ने अपनी उन्नत कला से समृद्ध किया और आने वाले काल में जहॉ लखनऊ, बनारस और गढ़वाल में स्थानियता की छाप लिये अनेक चित्रकारों द्वारा सुन्दर कलात्मक चित्रों का निर्माण हुआ है, जिसमें गढ़वाल के चित्रकार मोलाराम काफी विख्यात हुए।*

कुंजी शब्द– प्राचीन काल, सांस्कृतिक केन्द्रों, सुरूचि, लावण्यपूर्ण, हस्तकलाओं, चित्रकारों , कलात्मक ।

उत्तर प्रदेश में छापाकला और काष्ठ–छापा का चलन अंग्रेजों के समय से ही प्रारम्भ हो गया था। छपाई तकनीक के साथ–साथ यहॉ छापाकला भी विकसित होती गयी। बनारस, लखनऊ, जौनपुर, इलाहाबाद, मेरठ, आगरा आदि नगरों में छापेखाने स्थापित किये गये। इन छापेखानों में प्रायः पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन होता था। प्रारम्भ में काष्ठ–छापों द्वारा विवरणात्मक चित्रों की छपाई का कार्य होता था।

लिथो–छपाई के बाद इन चित्रों का चलन धीरे–धीरे कम होता गया। लिथोग्राफी एवं लखनऊ के लाल बहादुर द्वारा हाथ से काष्ठ छापे छपने लग गये। सन् 1854 ई0 में लखनऊ के लाल बहादुर द्वारा हाथ से छपे कई लिथो–छापे उपलब्ध हुए हैं। इस प्रकार अन्य छापाकार भी छापाकला द्वारा पुस्तकों के लिए छापा चित्रों का निर्माण किया करते थे। लखनऊ के खड्ग विश्वास प्रेस में मुद्रित धार्मिक पुस्तकों में अनेक छापाचित्र छपते थे। सन् 1907 में आयोजित औद्योगिक कान्फ्रेन्स में लिये गये निर्णय के अनुसार प्रदेश में कला एवं शिल्प को प्रोत्साहित एवं विकसित करने के लिए सन् 1911 ई0 में लखनऊ में राजकीय कला एवं शिल्प विद्यालय की स्थापना हुई। प्रथम प्रधानाचार्य श्री नेथनियल हर्ड नियुक्त हुए।

सन् 1925 ई0 में बंगाल के प्रख्यात चित्रकार श्री असित कुमार हाल्दार को लखनऊ आर्ट स्कूल में प्रथम भारतीय प्रिंसिपल के रूप में लाया गया। श्री हाल्दार ने यहॉ के पाठ्यक्रम में भारतीय कला शैलियों के साथ ही पाश्चात्य यथार्थवादी पद्धति को भी शिक्षा में महत्व दिया। शीघ्र ही प्रसिद्ध चित्रकार श्री वोरेश्वर सेन एवं प्रख्यात् मूर्तिकार श्री हिरण्यमय राय चौधरी इस विद्यालय से सम्बद्ध हुए। श्री एल0एम0 सेन जो कि सन् 1918 ई0 में ही यहॉ अध्यापक नियुक्त हो चुके थे और इसी बीच उच्च शिक्षा के लिए लन्दन गये हुए थे, लौट चुके थे। अतः सब मिलाकर एक अत्यन्त सुन्दर स्वरूप वातावरण इस समय निर्मित हो चुका था।

श्री एल0एम0 सेन का कला जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान है। पाश्चात्य यथार्थवादी चित्रकारों में आचार्य एल0एम0सेन का नाम विशेष महत्वपूर्ण है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। चित्रकला के क्षेत्र में तो वे जाने माने हैं ही ग्राफिक्स कला, लिनोकट, वुडकट, ड्राई प्वाइंट आदि शैलियों में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया। भारत में इस क्षेत्र के वे प्रारम्भिक छापा कलाकारों में से एक थे।

कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ में कालांतर में छापाकला सेक्शन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। छपाई तकनीक का ज्ञान कला–छात्रों को आवश्यक समझ कर यहॉ लिथो प्रोसेस एण्ड फोटो मैकेनिकल विभाग की स्थापना की गई।

कला शिक्षा का राज्य में प्रसार–प्रचार होने लगा।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

अतः कला शिक्षक बंगाल से उत्तर प्रदेश में आने लगे उस समय कला एवं शिल्प महाविद्यालय में भी अधिकतर कला शिक्षक बंगाल के ही थे।

लखनऊ स्कूल को इसका श्रेय जाता है कि उसने एल0एम0सेन जैसा देश का महान बहुमुखी कलाकार पैदा किया है। वह वुडकार्विंग में इतनी दक्षता रखते थे कि वह अपने समय के सबसे बड़े इस माध्यम में कार्य करने वाले छापा कलाकार थे। हर भारतीय कलाकार की भॉति एल0एम0 सेन गॉव के दृश्यों को बहुत पसन्द करते थे और उनको बड़ी श्रद्धा से चित्रित करते थे। वह अक्सर अपनी टूटी–फूटी मोटर साइकिल पर सवार हो ग्रामीण क्षेत्रों में जाया करते थे और वहॉ के लोगों तथा उनके मकान और झोपड़ियों को बहुत सुन्दर ढंग से चित्रित करते थे। उनके शोध कार्य केवल चित्र और मूर्तिकला में ही नहीं थे बल्कि ग्राफिक्स विधा एवं फोटोग्राफी में भी उन्होंने रोचक प्रयोग किये हैं। अकादमिक शैली में वे भारत के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में से एक माने जाते हैं।

स्वतन्त्रता के बाद कला की शिक्षा और बेहतर हो इसके लिए लखनऊ स्कूल में महत्वपूर्ण योगदान सुधीर रंजन खास्तगीर ने किया। सन् 1956 ई0 में प्रिंसिपल पद पर नियुक्त हुए और लखनऊ स्कूल को नई रूपरेखा दिये जाने की योग्यता जो एल0एम0सेन के युग में आरम्भ हुई थी, खास्तगीर के परिश्रम द्वारा सम्भव हुई। तीन और विषय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये गये जिसमें सेरामिक्स, होम क्राट एवं प्रिन्ट मेकिंग जागरूक प्राचार्यों ने छापाकला को व्यवसायिकता के साथ–साथ स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में भी विकसित किया। यहॉ प्रारम्भ में काष्ठ–छापे बनाये जाते थे। सन् 1964 ई0 में प्रख्यात् चित्रकार कलामर्मज्ञ दिनकर कौशिक के प्राचार्य पद पर आसीन होने के बाद स्वतन्त्र 'छापा–कला' सेक्शन की स्थापना की गई। श्री जे0के0 अग्रवाल इस विभाग के अध्यक्ष नियुक्त हुए, उस समय श्री जे0के0 अग्रवाल ने प्रिन्ट मेकिंग की उच्च शिक्षा लन्दन के स्लेड स्कूल में प्राप्त की। इससे पूर्व ''लिथोग्राफी एण्ड फोटो मैकेनिकल'' में हीरा सिंह बिष्ट और महिपाल सिंह कार्यरत थे जो व्यवसायिक कला के छात्रों को लिथो माध्यम द्वारा छापाकला का ज्ञान देते थे और ब्लॉक पद्धति को सिखाते थे। श्री जयकृष्ण अग्रवाल की मौलिक सूझबूझ के कारण यह विभाग विकसित होने लगा। कालांतर में जयकृष्ण अग्रवाल ने बड़ौदा और दिल्ली में प्रसिद्ध छापा चित्रकार सोमनाथ होर से छापा कला की अन्य विधाओं की जानकारी प्राप्त की। धीरे–धीरे छापाकला विभाग में काष्ठ–छापाकला के साथ–साथ लिथोग्राफी, एचिंग, एक्वटिन्ट आदि पद्धतियों की शिक्षा दी जाने लगी। कुछ समय बाद श्री कौशिक शान्ति निकेतन में प्रिंसिपल होकर चले गये तब प्रिंसिपल पद पर 1968 ई0 में प्रमुख चित्रकार आर0एस0 बिष्ट नियुक्त हुए। बिष्ट एक अनुभवी और शक्तिशाली कलाकार और कला शिक्षक थे। विदेशों में भ्रमण और कला अध्ययन द्वारा उनका कला की शिक्षा का दृष्टिकोण अत्यन्त रचनात्मक और नवीन शिक्षा प्रणाली पर आधारित था। इसी समय ऐतिहासिक कला महाविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय में विलीन कर लिया गया और अब वह लखनऊ विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय के रूप में मुख्य रूप से तीन विभागों जैसे फाईन आर्ट्स, कामर्शियल आर्ट्स एवं मूर्तिकला विभाग से युक्त अन्य कई डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स के साथ–साथ टेक्सटाइल डिजाईन में स्नातक की पढ़ाई की जाती है।

कालान्तर में लिथोग्राफी के अध्यापन के लिए मनोहर लाल और गोपाल दत्त शर्मा को शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। इन सभी शिक्षकों ने यहॉ छापाकला का विकास किया। यहॉ से शिक्षा प्राप्त कर छापाकार आज राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बना चुके हैं।

उत्तर प्रदेश के कला इतिहास या छापाकला का इतिहास स्वरूप लखनऊ के उपरान्त बनारस में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का नाम उल्लेखनीय है। बनारस रायकृष्ण दास की सेवाओं का आभारी रहेगा, जिन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में कला भवन की स्थापना में सहायता दी तथा वहॉ के लोगों में कला के प्रति जागरूकता प्रदान करने में सक्रिय योगदान दिया। आरम्भिक युग में चित्रकला में श्री अहिवासी और मूर्तिकला में श्रीकृष्णन शिक्षा देते थे। श्री के0एस0 कुलकर्णी ने डीन की हैसियत से फैकल्टी में प्रवेश किया और छापाकला के विकास के लिए दीपक बनर्जी (कलकत्ता) को यहॉ शिक्षक के रूप में लाये गये। श्री बनर्जी फ्रांस से छापाकला का विशेष अध्ययन कर चुके हैं। ये एचिंग पद्धति एवं विकोसिटी से छापा–चित्र बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके निर्देशन में अनेकों छापाकार इस दृश्य कला संकाय से छापाकला सीखकर स्थापित हुए। मैंने भी बी0एफ0ए0 की शिक्षा लेते समय ग्राफिक्स की प्रारम्भिक शिक्षा की श्री दीपक बनर्जी के कुशल निर्देशन में ही प्राप्त किया है। और आज छापाकला क्षेत्र में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर छापाकला में निरन्तर प्रायोगिक कार्य रचना में संलग्न हूँ। तथा अपना दायित्व बोध के निर्वहन हेतु छापाकला क्षेत्र में आने वाले नयी पीढ़ी को सरल एवं सशक्त मार्गदर्शन उपलब्ध करा सकूँ, के लिए शोध विषय ग्राफिक्स माध्यम का चुनाव किया।

वाराणसी में डी0पी0 बनर्जी ने जो कला अनुशासन छापाकला में स्थापित किया उनकी रचनात्मकता एवं सक्रियता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

से प्रभावित होकर अन्जन चक्रवर्ती तथा पेन्टिंग विभाग के प्राध्यापक डी0पी0 मोहन्ती और वेद प्रकाश मिश्र भी छापाकला को आगे बढ़ाने में कार्य कर रहे हैं। ये स्वयं भी प्रिन्ट्स तैयार करते हैं। इस विधा में कला अनुशासन के साथ ही श्रमनिष्ठ दैहिक कौशल की आवश्यकता होती है। कुछ विद्यार्थी विशेष को ही इसके शिल्पियों की तरह इसकी कठिन प्रक्रिया से गुजरने का शौक होता है।

लखनऊ में राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र की स्थापना के बाद छापाकला का अप्रत्याशित रूप से विकास हुआ। केन्द्र के छापाकला विभाग के सुपरवाइजर सरोज सिंह की देखरेख में यहॉ से अनेक छापाकार सामने आये। वरिष्ठ और युवा छापाकार यहॉ आकर नियमित छापा रचना कर रहे हैं। कुछ युवा छापाकार काष्ठ–छापे भी बनाते हैं जो तकनीकी दृष्टि से श्रेष्ठ होते हैं।

राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र में मुख्य रूप से कला एवं शिल्प महाविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त कलाकारों को अपनी प्रतिभा का विकास करने की सुविधा प्राप्त हुई तो आज केन्द्र के ग्राफिक विभाग में गतिविधियॉ और सक्रियता बढ़ने से माहौल सृजित हुआ है। उसी का प्रतिफल आज प्रदेश की ग्राफिक कला को अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर प्रतिनिधि ा के तौर पर सामने रखी जा रही है। लखनऊ में ज्योति शुक्ता, आर0के0 सरोज, कु0 सिंह, संदीप भाटिया और किरण राठौर सम्प्रति समकालीन ग्राफिक कला के प्रखर शिल्पी रहे हैं। श्रीमती इन्दु रस्तोगी एवं सावित्री पाल काफी सक्रिय छापाकार थीं, पर इस समय वह इस दुनिया में नहीं रहीं। बनारस की अर्चना सिंह की तरह लखनऊ में भी एम0एफ0ए0 की पढ़ाई छापाकला से कर दो प्रतिभावयस्क छात्रायें शैली गुप्ता और रेणु सिंह के कार्य में नवीनता दिखाई देती है।

जहॉ लखनऊ कला एवं शिल्प महाविद्यालय एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में दृश्य कला संकाय में जैसे–प्रोफेशनल शिक्षण पद्धति कला के क्षेत्र में अपनाया जा रहा है वहीं उत्तर प्रदेश में कई ऐसे प्रमुख क्षेत्र हैं जहॉ कला शिक्षा के नाम पर बी0ए0 और एम0ए0 की डिग्री दी जाती रही है। जिसमें मुख्य रूप से चित्रकला एक विषय मात्र के तौर पर पढ़ाई जाती रही है। कमजोर पाठ्यक्रम तथा समय के अभाव में विद्यार्थी पढ़ाई समाप्त कर कला रूपी अथाह सागर में पहुॅचते हैं तो उन्हें अन्तः निराशा ही हाथ लगती है, क्योंकि कला महाविद्यालयों से बी0एफ0ए0 और एम0एफ0ए0 की शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी कला के विभिन्न पक्षों को बारीकी से जान पाते हैं। वहीं अपेक्षाकृत डिग्री कालेजों में इसकी कमी हमेशा से देखी जाती रही है। उत्तर प्रदेश में आगरा, मथुरा, बरेली, अलीगढ़, कानपुर, इलाहाबाद आदि शहरों में कई डिग्री कालेज हैं जहॉ कई कुशल शिक्षक कला शिक्षा देते रहे हैं। आगरा कालेज, आगरा अपेक्षाकृत अन्य कालेजों से बेहतर प्रदर्शन करता रहा है, यहॉ कला के कई बेहतर मनीषियों द्वारा शिक्षा प्रदान किया जाता रहा है। जिसमें श्री वी0पी0 काम्बोज कुशल चितेरे हैं जो कई वर्षों तक यहॉ विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत थे। कालांतर में आप राष्ट्रीय ललित कला अकादमी के सचिव पद पर भी सुशोभित रहे हैं।

निवर्तमान विभागाध्यक्ष डॉ0 श्रीमती चित्रलेखा सिंह ने भी कला क्षेत्र में विशेष दखल रखती है, आप कुशल चित्रकार के साथ–साथ कुशल कला पक्ष लेखिका भी हैं, आगरा में शोध निर्देशक के रूप में शोधार्थियों की पहली पसन्द हैं। आपने कक्षा शिक्षा की उच्च डिग्री डी0लिट् की उपाधि प्राप्त कर विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दे रही हैं।

वरिष्ठ प्रवक्ता पद से अवकाश प्राप्त श्री अश्वनी शर्मा जिन्होंने अपनी शिक्षा आगरा कालेज से ही बी0ए0 एवं एम0एफ0ए0 कर राष्ट्रीय स्तर पर अपने चित्रों के द्वारा पहचान बनाया है। आपको ललित कला अकादमी का पुरस्कार प्राप्त है।

आगरा कालेज, आगरा में चित्रकला के अलावा ग्राफिक्स की प्रारम्भिक शिक्षा भी कभी दी जाती रही थी, एक छोटी सी प्रेस भी विभाग में है परन्तु वर्तमान में उसकी स्थिति अत्यन्त ही दयनीय है। काफी कमजोर तकनीक से बना यह प्रेस अपने पुराने दिनों को याद करता हुआ देखा जा सकता है। हॉलाकि पूर्व के सालों में प्रदेश के कई छापा चित्रकार गोपाल दत्त शर्मा आदि को छापाकला के बारीकियों को बताने (डेमोंस्ट्रेशन) के लिए आमंत्रित किये जाते रहे हैं।

आगरा में एक और दूसरे विश्वविद्यालय के रूप में डी0ई0आई0 (डीम्ड युनिवर्सिटी) विश्वविद्यालय अपने कुशल प्रशिक्षण के लिए बाहर के राज्यों में भी सुपरिचित है। यहॉ के चित्रकला विभाग के अन्तर्गत ही ग्राफिक्स एक विषय मात्र के रूप में पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है, जिसे डॉ0 शिवेन्द्र सिंह के कुशल निर्देशन में विद्यार्थी अब तक रिलीफ माध्यम में छापाचित्रण का कार्य करते रहे हैं। विभाग में रिलीफ प्रिन्ट हेतु एक छोटा–सा मशीन भी बनी जिसकी तकनीकी पक्ष काफी अच्छी नहीं मानी जा सकती है, परन्तु अब वहॉ अच्छी एचिंग प्रेस आ चुकी है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भी छापा कला की शिक्षा दी जाती है। परन्तु वहॉ हमेशा से कुशल शिक्षक की कमी महसूस किया जाता है।

आगरा में छापाकला का इतिहास मुख्य रूप से पिछले कुछ वर्षों से ही बनाने का प्रयास किया गया है। अत्यन्त नवोदित पौधे के रूप में विकसित होता हुआ ललित

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

कला संस्थान डॉ0 वी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय के अन्तर्गत ग्राफिक्स विभाग का खोला गया। यहॉ ग्राफिक्स विभाग में कई वर्षों तक बी0एफ0ए0, एम0एफ0ए0 एवं एम0फिल की शिक्षा छापाकला विषय में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षक संजीव किशोर गौतम के कुशल निर्देशन में दी जाती रही थी। संजीव किशोर गौतम अपने अत्यन्त बड़े साइज के जटिल एवं प्रायोगिक क्रियेटिव एचिंग प्रिन्ट के लिए भारत ही नहीं वरन् विदेशों में भी चर्चित रहे हैं। यहॉ इनके कुशल निर्देशन में सिर्फ पिछले कुछ वर्षों में विद्यार्थियों को कई अखिल भारतीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कारों से अपने–अपने छापा चित्रण के लिए सम्मानित किया जाता रहा है। आपके निर्देशन में तब मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से कई छात्र–छात्राओं को राष्ट्रीय छात्रवृत्ति (सुश्री शशिकला सिंह एवं प्रिति अग्रवाल) को ग्राफिक्स के लिए आगरा में सर्वप्रथम प्रदान किया गया था।

अभिजीत रॉय, शशिकला सिंह, प्रिति अग्रवाल, पुजा गुप्ता, विनोद कुमार, रिचा शर्मा, छोटे लाल, सारिका रानी, नम्रता गुप्ता, शिव ज्ञानेन्द्र सिंह, दीप्ती सिंह आदि कई ऐसे नाम हैं जो बी0एफ0ए0 एवं एम0एफ0ए0 के छात्र–छात्रायें रहे हैं जिनके छापा चित्र समय–समय पर अखिल भारतीय एवं राज्य स्तरीय जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित एवं कई प्रतिष्ठित कला प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया जाता रहा है। वर्ष 2006 में अन्तर्राष्ट्रीय प्रिन्ट विनालय भारत भवन, भोपाल में इस विभाग का असम्भावि प्रदर्शन देखा गया, इस छोटे से विभाग से एक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार एवं पॉच विद्यार्थियों के छापा चित्रों की प्रदर्शनी हेतु चयन होना एक अत्यन्त शुभ सूचक चिन्ह माना जा सकता है। ग्राफिक्स विभाग में एचिंग, सेरीग्राफी, रिलीफ, कोलोग्राफी आदि के लिए अत्यन्त आधुनिक मशीन आदि की सुविधा संजीव किशोर गौतम के कुशल प्रयासों का प्रतिफल स्वरूप उपलबध हो सकी थी। सन् 2007 में इन्होंने पुनः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ग्राफिक्स के प्रवक्ता रूप में पदभार किया और पुनः अनेकानेक प्रयासों से वहॉ छापा कला हेतु अत्यधिक आधुनिक स्टूडियो का निर्माण किया जिसमें सम्भवत् भारत का सबसे बड़ा एचिंग प्रेस को स्थापित कराने का श्रेय डॉ. संजीव किशोर गौतम को ही प्राप्त है। यहॉ अनेक विद्यार्थियों ने छापा कला में सुन्दर एवं प्रयोगपरक बड़े आकार का कार्य किया जिसमें श्री विनोद कुमार को उनके छापा चित्र के लिए ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपके निर्देशन में अनेक विद्यार्थियों ने बी0एफ0ए0 की शिक्षा प्राप्त कर एम0एफ0ए0 एवं उच्च शिक्षा हेतु बड़ौदा, शान्तिनिकेतन, हैदराबाद, दिल्ली आर्ट्स कालेज, जामिया विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेकर कुशल कार्य करते रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान कल आज और कल– विश्वास कुमार, पेज नं0– 1
2. एन0के0 शर्मा, के0सी0 आचार्य, एन0क0 जैन, भारत की भौगोलिक एवं आर्थिक समस्या, पेज नं0– 295
3. राजस्थान की समसामयिक कला, रा0ल0क0अ0, पृष्ठ सं0– 82
4. राजस्थान का कला–दृश्य तथा कला–शिक्षा समकालीन – प्रथम संस्करण– पेज नं0– 67
5. राजस्थान का कला दृश्य तथा कला शिक्षा – सुमहेन्द्र समकालीन–प्रथम संस्करण– पेज नं0– 68
6. समकालीन कला– 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ से उत्तर प्रदेश (1980) की कला प्रवृत्तियॉ– मदनलाल नागर – पे0नं0– 46
7. प्राचीन काष्ठ छापा कला – श्याम शर्मा, पृ0सं0– 63
8. समकालीन– प्रथम संस्करण, रा0ल0क0अ0 नई दिल्ली मदनलाल
9. समकालीन कला– प्रथम संस्करण– उत्तर प्रदेश में कला प्रशिक्षण– असद अली– रा0ल0क0अ0 नई दिल्ली, पृ0 सं0– 55
10. कला त्रैमासिक– छापाकला विशेषांक– डॉ. गौतम चटर्जी रा0ल0क0अ0उ0प्र0– अप्रैल से जून 2002, पेज नं0– 5,6

*****